

RNA : Real News Analysis

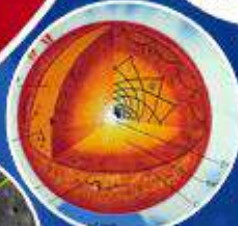
DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण



DATE
फरवरी
17
2025

- Key Point**
1. National News
 2. International News
 3. Govt. Mission, Apps
 4. Awards & Honours
 5. Sports News
 6. Economic News
 7. Newly Appointment
 8. Defence News
 9. Important Days
 10. Technology News
 11. Obituary News
 12. Books & Authors



By Ankit Avasthi Sir

नया आयकर विधेयक 2025 / New Income Tax Bill 2025

संदर्भ:

वित्त मंत्री **निर्मला सीतारमण** ने **गुरुवार, 13 फरवरी** को **लोकसभा** में **आयकर विधेयक, 2025** पेश किया। यह नया विधेयक संसद से पारित होने के बाद **63 वर्ष पुराने आयकर अधिनियम, 1961** का स्थान लेगा और **भारत की प्रत्यक्ष कर प्रणाली को सरल और आधुनिक** बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

आयकर अधिनियम, 1961:

- संशोधन एवं जटिल संरचना:** आयकर अधिनियम, 1961 में कई संशोधन हुए हैं, जिससे इसकी संरचना जटिल और विस्तृत हो गई है।
 - वर्तमान में यह अधिनियम **823 पृष्ठों, 47 अध्यायों, 298 धाराओं और 1,200 प्रोविज़ो** तक फैला हुआ है।
- भाषा में अस्पष्टता और कर विवाद:** अधिनियम की भाषा में अस्पष्टता और कई क्रॉस-रेफरेंस के कारण कर विवाद और लंबी कानूनी प्रक्रिया उत्पन्न होती है।
- "पिछला वर्ष" और "मूल्यांकन वर्ष" की जटिलता:** "पिछला वर्ष" (Previous Year) और "मूल्यांकन वर्ष" (Assessment Year) की अवधारणाओं के कारण करदाताओं को दो अलग-अलग समय अवधियों पर नज़र रखनी पड़ती है, जिससे भ्रम की स्थिति बनती है।

आयकर विधेयक, 2025 में नए प्रावधान:

- सरलीकृत संरचना:**
 - विधेयक **622 पृष्ठों** का है, जो 1961 अधिनियम की तुलना में **24% छोटा** है।
 - इसमें **23 अध्याय, 536 धाराएँ और 16 अनुसूचियाँ** हैं।
 - 57 उदाहरणात्मक तालिकाएँ** जोड़ी गई हैं, जबकि 1961 अधिनियम में केवल **18** थीं।
 - 1,200 प्रोविज़ो और 900 स्पष्टीकरण** हटाकर अनावश्यक प्रावधानों को समाप्त किया गया है।
- "कर वर्ष" की अवधारणा:**
 - "पिछला वर्ष" और "मूल्यांकन वर्ष" की जगह अब केवल **"कर वर्ष"** होगा।
 - कर वर्ष **1 अप्रैल से 31 मार्च** तक होगा।
 - नए व्यवसाय या पेशे के लिए कर वर्ष **स्थापना की तिथि से उस वित्तीय वर्ष के अंत तक** माना जाएगा।
- कटौतियों और छूट का सरलीकरण:**
 - किराए, जीवन और स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम, भविष्य निधि (PF) योगदान, और गृह ऋण** पर कटौती स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई है।
 - धारा 54E (1992 से पहले स्थानांतरित परिसंपत्तियों पर पूंजीगत लाभ की छूट)** जैसे पुराने प्रावधान हटाए गए हैं।
- वर्चुअल डिजिटल संपत्तियों को शामिल करना:**
 - क्रिप्टोकॉइन्स और अन्य डिजिटल संपत्तियों** को अब **संपत्ति** के रूप में वर्गीकृत किया गया है और इन्हें **पूंजीगत परिसंपत्तियों** की तरह माना जाएगा।

5. विवाद समाधान तंत्र में सुधार:

- विवाद समाधान पैनल (DRP)** की प्रक्रियाओं को स्पष्ट किया गया है।
- निर्णय, तर्क और बिंदुओं को स्पष्ट करने से **विवादों और अस्पष्टता को कम किया गया है।**

6. डिजिटल निगरानी और अनुपालन:

- CBDT (केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड)** को **डिजिटल कर निगरानी प्रणाली** लागू करने की शक्ति दी गई है, जिससे बार-बार कानूनी बदलाव की जरूरत नहीं होगी।
- "वर्चुअल डिजिटल स्पेस"** में अब **सोशल मीडिया अकाउंट्स, ईमेल सर्वर, क्लाउड स्टोरेज और ऑनलाइन बैंकिंग प्लेटफॉर्म** शामिल होंगे।
- कर अधिकारी **सर्वे और जांच के दौरान डिजिटल स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।**

नए आयकर अधिनियम की आवश्यकता:

जटिल कानूनी ढांचा:

- आयकर अधिनियम, 1961** में हर वर्ष केंद्रीय बजट के माध्यम से संशोधन किए जाते रहे हैं।
- बीते दशकों में अधिनियम में कई नए प्रावधान जोड़े गए-
 - स्रोत पर कर कटौती (TDS)**
 - न्यूनतम वैकल्पिक कर (MAT)**
 - ट्रांसफर प्राइसिंग**
 - अग्रिम मूल्य निर्धारण समझौते (APA)**
 - विवाद समाधान तंत्र**
- इसके अलावा, **क्षेत्र-विशिष्ट, उद्योग-विशिष्ट और लाभ-आधारित प्रोत्साहन** जोड़े गए हैं।
- इससे वर्तमान अधिनियम की संरचना **अत्यधिक जटिल** हो गई है।

कठिन भाषा:

- वर्तमान आयकर अधिनियम की **भाषा तकनीकी और जटिल** है, जिसे समझना मुश्किल होता है।
- इससे **व्याख्या में भिन्नता** उत्पन्न होती है, जिससे करदाताओं और कर प्राधिकरणों के बीच **विवाद और मुकदमों** की संख्या बढ़ जाती है।

नए अधिनियम का उद्देश्य:

- कर प्रणाली से जुड़े विवादों और मुकदमों को कम करना।**
- करदाताओं के लिए अनुपालन को आसान बनाना।**

तीस्ता बांध और जलवायु परिवर्तन / Teesta Dam and Climate Change

संदर्भ:

हाल ही में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति ने सिक्किम की तीस्ता नदी पर स्थित तीस्ता-3 बांध के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव देने की सिफारिश की है।

जलवायु परिवर्तन और हिमनदों का पिघलना:

- वैश्विक तापवृद्धि (Global Warming):** ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमनदों (ग्लेशियर) के पिघलने की गति तेज हो रही है।
- ब्लैक कार्बन का प्रभाव:** ब्लैक कार्बन (कालिख) कण हिमनदों के पिघलने की प्रक्रिया को तेज कर देते हैं।
- हिमनद झीलों की संख्या में वृद्धि:** 2011 से 2024 के बीच हिमनद झीलों की संख्या 33.7% बढ़ी है।
- झीलों का विस्तार:** दक्षिण ल्होनक झील का आकार 1960 के दशक से बढ़कर 2023 में 167 हेक्टेयर हो गया।

तीस्ता-3 बांध का विनाश:

1. विनाश का कारण:

- दक्षिण ल्होनक झील के किनारे स्थित मोरीन (moraine) के ढहने से तीस्ता-3 जलविद्युत बांध नष्ट हो गया।
- इस आपदा से लगभग 50 अरब लीटर पानी घाटी में बह गया, जिससे कई भूस्खलन और भारी नुकसान हुआ।

2. प्रभाव और हानि:

- इस विनाशकारी बाढ़ में 100 से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई।
- चार जिलों में 80,000 से अधिक लोग प्रभावित हुए।
- बांध के विफल होने से बाढ़ की तीव्रता और बढ़ गई, क्योंकि मलबे ने एक बैटरिंग राम (तोड़फोड़ करने वाले हथियार) की तरह काम किया।

3. विश्लेषण और भविष्य की चुनौतियाँ:

- बाद के विश्लेषणों से पता चला कि झील की मोरीन अस्थिर थी, जिससे यह आपदा घटी।
- वैज्ञानिक अब झील की अस्थिरता और संभावित खतरों की निगरानी कर रहे हैं।
- यह घटना हिमनद झीलों के विस्तार से उत्पन्न खतरों को उजागर करती है, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय भूगर्भीय अस्थिरता के संदर्भ में।

तीस्ता-3: नया डिज़ाइन और चुनौतियाँ-

1. नया निर्माण और सुरक्षा उपाय:

- निर्माण सामग्री:** केवल कंक्रीट से बनाया जाएगा, पत्थरों का उपयोग नहीं होगा।
- बेहतर स्पिलवे क्षमता:** जल निकासी प्रणाली (स्पिलवे) तीन गुना बढ़ी होगी।
- सुरक्षा उपाय:** अर्ली-वार्निंग सिस्टम स्थापित किया जाएगा।
- जलवायु अनुकूलता:** आईएमडी द्वारा अनुमानित 'वर्स्ट-केस' बारिश पर आधारित डिज़ाइन।

2. नए डिज़ाइन की सुरक्षा चिंताएँ:

- अनिश्चितता:** जलवायु परिवर्तन अप्रत्याशित है, और भविष्य की बाढ़ अतीत से भिन्न हो सकती हैं।
- वर्षा आधारित मॉडलिंग की सीमाएँ:**
 - वर्षा आधारित मॉडलिंग अविश्वसनीय मानी जाती है।
 - यह गाद (sediment) परिवहन, कटाव और नदी तल के बदलाव को पूरी तरह से नहीं दर्शाती।
- तेजतरार बाढ़ का खतरा:** यदि पहले से अधिक तीव्र बाढ़ आई, तो नुकसान और भी अधिक हो सकता है।

3. विशेषज्ञों की राय और चिंताएँ:

- खामियाँ:** आईआईटी भुवनेश्वर, आईआईएससी बेंगलूर, और आईटीबीपी के अध्ययन ग्लेशियर लेक आउटब्रेस्ट फ्लड (GLOF) मॉडलिंग में खामियाँ दर्शाते हैं।
- जलवायु पूर्वानुमान की चुनौतियाँ:** चरम वर्षा की सटीक भविष्यवाणी कर पाना कठिन है।
- इंजीनियरिंग समाधानों की सीमाएँ:**
 - अमेरिकी विशेषज्ञों का मत - "इंजीनियरिंग जलवायु परिवर्तन हल नहीं कर सकती, पीछे हटना अनिवार्य है।"
- जोखिम-केंद्रित निर्णय लेने की आवश्यकता:** केवल आर्थिक लाभ पर ध्यान न देकर जोखिम न्यूनीकरण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

ग्रामीण भारतीय 'अंतर्निहित भूख' से पीड़ित / Rural Indians Suffer from a 'Hidden Hunger'

संदर्भ:

एक नए अध्ययन में, जिसे अंतरराष्ट्रीय अर्धशुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (ICRISAT), अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI), और आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन केंद्र (CESS) के वैज्ञानिकों ने किया है, जिसमें बताया गया कि ग्रामीण भारत में बड़ी संख्या में लोग प्रोटीन की कमी से जूझ रहे हैं।

छिपी हुई भूख (Hidden Hunger):

छिपी हुई भूख या सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी एक प्रकार की कुपोषण की स्थिति है, जिसमें **जिंक, आयोडीन, आयरन** आदि आवश्यक पोषक तत्वों का सेवन या अवशोषण पर्याप्त नहीं होता, जिससे **स्वास्थ्य और विकास** प्रभावित होते हैं।

मुख्य बिंदु:

- यह समस्या उन समुदायों में भी हो सकती है, जहां भोजन की उपलब्धता ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त होती है।
- लोग यदि **पोषक तत्वों से भरपूर फल, सब्जियां या पशु उत्पाद** अपनी **आर्थिक स्थिति के कारण** नहीं खा पाते, तो सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी अनिवार्य हो जाती है।
- यह कमी अक्सर **समाज में बिना पहचान किए बनी रहती है**, लेकिन इसके गंभीर प्रभाव होते हैं।
- **कम और मध्यम आय वाले देशों** में यह **स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक विकास** पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

इसी कारण, **सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को "छिपी हुई भूख" कहा जाता है।**

रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

- प्रोटीन की अपर्याप्त खपत:**
 - भारत के **अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय (semi-arid tropics) क्षेत्रों** में दो-तिहाई से अधिक परिवार **अनुशासित मात्रा से कम प्रोटीन** का उपभोग कर रहे हैं।
 - यह समस्या **प्रोटीन स्रोतों की उपलब्धता के बावजूद बनी हुई है।**
- मुख्य खाद्य पदार्थों पर निर्भरता:** इन क्षेत्रों में लोग **चावल और गेहूं जैसे प्रमुख अनाजों** पर अत्यधिक निर्भर हैं।
 - ये अनाज **रोजाना प्रोटीन खपत का 60-75% योगदान** देते हैं।
- प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों का कम उपयोग:**
 - **दालें, डेयरी उत्पाद, अंडे और मांस** का सेवन अपेक्षाकृत कम है।
 - इसका कारण केवल अभाव नहीं, बल्कि **संस्कृतिक खाद्य प्राथमिकताएँ**, पोषण संबंधी जागरूकता की कमी और **आर्थिक सीमाएँ** हैं।

- समृद्ध परिवारों में भी प्रोटीन की कमी:** अधिक आय वाले परिवार, जो विविध आहार वहन कर सकते हैं, **फिर भी अनुशासित प्रोटीन स्तर तक नहीं पहुँच पाते।**
- महिलाओं की शिक्षा और संतुलित आहार:** जिन घरों में **महिलाएँ अधिक शिक्षित** हैं, वहाँ **संतुलित आहार का सेवन अधिक** होता है।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) की भूमिका:** **पीडीएस (PDS) ने कैलोरी सेवन बढ़ाने में मदद की है**, लेकिन इसका मुख्य ध्यान **अनाज पर रहा**, जिससे प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की आपूर्ति सीमित रही।
- आहार आदतों के पीछे के कारण:**
 - गहरी जमी हुई आहार संबंधी आदतें।
 - प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों के महत्व की जानकारी की कमी।
 - आर्थिक सीमाएँ।

सिफारिशें (Recommendations):

- पोषण शिक्षा (Nutrition Education):** **जनस्वास्थ्य कार्यक्रमों और विद्यालय पाठ्यक्रम** में पोषण शिक्षा को शामिल किया जाए।
- परिस्थिति-विशेष दृष्टिकोण:**
 - **एक ही नीति सभी के लिए उपयुक्त नहीं होती**, इसलिए क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार रणनीतियाँ अपनाई जाएँ।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) में सुधार:**
 - **प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों** को सरकारी राशन प्रणाली में शामिल किया जाए।
- कृषि प्रणाली में विविधता (Diversification of Farming Systems):**
 - **सुपोषण युक्त फसलें** जैसे बाजरा, दालें उगाने को प्रोत्साहित किया जाए और **डेयरी पशुओं** को कृषि में जोड़ा जाए।

भारत की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण / Preserving India's Cultural Heritage

संदर्भ:

भारत विश्व के सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का घर है। हालांकि, ये महत्वपूर्ण स्मारक आज जलवायु परिवर्तन और मानवीय गतिविधियों के कारण गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की भूमिका:

स्थापना एवं उद्देश्य:

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की स्थापना 1861 में ऐतिहासिक स्मारकों और स्थलों के संरक्षण के लिए की गई थी। वर्तमान में, ASI प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम (1904) और प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम (1958) के तहत 3,698 संरक्षित स्मारकों की देखरेख करता है।

ASI द्वारा किए जाने वाले कार्य:

- संरक्षण और पुनर्स्थापन:** मंदिरों, किलों, मकबरों, चर्चों, महलों और प्रागैतिहासिक स्थलों का नियमित रखरखाव।
- रोकथाम के उपाय:** जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अतिक्रमण और संरचनात्मक अस्थिरता से स्मारकों की रक्षा।
- निगरानी और शोध:** पर्यावरणीय परिवर्तन स्मारकों को कैसे प्रभावित कर रहे हैं, इस पर अध्ययन।
- कानूनी प्रवर्तन:** अवैध गतिविधियों और दुरुपयोग से स्मारकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना।

जलवायु परिवर्तन का सांस्कृतिक धरोहर पर प्रभाव:

- समुद्र स्तर में वृद्धि:** कोणार्क सूर्य मंदिर (ओडिशा) और महाबलीपुरम (तमिलनाडु) जैसे तटीय स्थलों को लवणीय जल प्रवेश और क्षरण का खतरा।
- भीषण गर्मी और सूखा:**
 - गर्म हवाएं और बदलते मौसम पैटर्न** प्राचीन संरचनाओं की स्थिरता को प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से बालू-पत्थर और चूना-पत्थर से बनी इमारतों पर असर।
- अधिक वर्षा और तेज हवाएं:** बढ़ती वर्षा और चक्रवात किलों, महलों और गुफा मंदिरों में जल क्षति और कटाव का कारण बनते हैं।
- वायु प्रदूषण:** ताजमहल (आगरा) जैसे स्मारक गंभीर रूप से प्रभावित, गंधक डाइऑक्साइड (SO₂) के कारण संगमरमर पीला पड़ रहा है।

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण हेतु व्यापक प्रयास:

भारत की सांस्कृतिक विरासत को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचाने के लिए नियमित निगरानी और संरक्षण उपाय अपनाए जा रहे हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) जलवायु सहनशील समाधान अपनाकर विरासत स्थलों को संरक्षित करने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

संरक्षण के प्रमुख उपाय:

नियमित निगरानी एवं जलवायु सहनशील समाधान:

- नियमित निगरानी:** सांस्कृतिक स्थलों की निरंतर निगरानी कर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है।
- वैज्ञानिक उपचार एवं संरक्षण तकनीक:** ASI ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण हेतु आधुनिक जलवायु सहनशील (climate-resilient) समाधान अपना रहा है।

जलवायु परिवर्तन की निगरानी हेतु उन्नत तकनीक:

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)** के सहयोग से ऐतिहासिक स्थलों पर स्वचालित मौसम केंद्र (AWS) स्थापित किए गए हैं।

वायु प्रदूषण निगरानी केंद्र: ताजमहल (आगरा) और बीबी का मकबरा (औरंगाबाद) जैसे स्थलों पर वायु प्रदूषण प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं, जो प्रदूषकों और वायु गुणवत्ता की निगरानी करती हैं।

संस्थागत समन्वय एवं आपदा प्रबंधन:

- अन्य एजेंसियों के साथ समन्वय:** ASI अन्य सरकारी निकायों के साथ नियमित बैठकें आयोजित कर संयुक्त रणनीतियां विकसित करता है।
- अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं में भागीदारी:** ASI अधिकारियों ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और UNESCO द्वारा आयोजित "संस्कृति धरोहर स्थलों के आपदा प्रबंधन" विषयक कार्यशाला में भाग लिया।
- आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश:** NDMA और ASI द्वारा सांस्कृतिक स्थलों हेतु "राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश" तैयार किए गए हैं, जिसमें जोखिम आकलन, आपदा तैयारी, और पुनर्वास योजनाएं शामिल हैं।

शिव शक्ति पॉइंट / Shiv Shakti Point

संदर्भ:

इसरो के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 के लैंडिंग स्थल 'शिव शक्ति पॉइंट' की आयु का अनुमान **3.7 अरब वर्ष** लगाया है। उन्नत इमेजिंग तकनीकों का उपयोग करके, उन्होंने **25 गड़ों** का अध्ययन किया और अलग-अलग भूभाग प्रकारों की पहचान की। उनके विश्लेषण से पता चला कि यह **समतल और कम ऊँचाई वाला क्षेत्र** इतने वर्षों पुराना है।

चंद्रयान-3 के अध्ययन के प्रमुख बिंदु:

- यह कालखंड पृथ्वी पर **आदि सूक्ष्मजीवों** (Primitive Microbial Life) के उद्भव के समय से मेल खाता है।
- आदि सूक्ष्मजीवन** का अर्थ है वे प्रारंभिक सूक्ष्म जीव, जो पृथ्वी पर सबसे पहले अस्तित्व में आए।
- वैज्ञानिकों की टीम**, जिसमें इसरो के इलेक्ट्रो-ऑप्टिक्स सेंटर (बेंगलुरु), भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (अहमदाबाद) और पंजाब विश्वविद्यालय (चंडीगढ़) के विशेषज्ञ शामिल हैं, ने शिव शक्ति प्वाइंट (चंद्रयान-3 का लैंडिंग स्थल) का पहला भूवैज्ञानिक मानचित्र बनाया।
- वैज्ञानिकों ने लूनर रिफ्लेक्टेंस ऑर्बिटर (LRO) वाइड-एंगल कैमरा जैसी उन्नत इमेजिंग तकनीकों का उपयोग कर **शिव शक्ति प्वाइंट के आसपास चंद्र सतह पर मौजूद चट्टानों का वितरण डेटा एकत्र किया।**

भूवैज्ञानिक मानचित्र के निष्कर्ष:

- इस क्षेत्र में तीन प्रकार की **भू-आकृति (Terrain Types)** पाई गईं:
 - ऊँचे और खुरदरे क्षेत्र (High-relief rugged terrain)
 - समतल मैदान (Smooth plains)
 - निचले और समतल मैदान (Low-relief smooth plains)
- भूवैज्ञानिक मानचित्रण (Geological Mapping)** विभिन्न डेटा को संगठित कर भूवैज्ञानिक इकाइयों में वर्गीकृत करने की एक प्रक्रिया है।
- इसरो के वैज्ञानिकों** के अनुसार, इस लैंडिंग स्थल का स्थानीय क्षेत्र मुख्य रूप से मैनजिनस (Manzinus) और बोगुस्लावस्की (Boguslawsky) क्रेटर्स के द्वितीयक प्रभाव (Ejecta) से बना है।

शिव शक्ति प्वाइंट:

- अगस्त 2023** में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा चंद्रयान-3 के लैंडिंग स्थल को **शिव शक्ति प्वाइंट** नाम दिया गया।
- 2024 में**, अंतरराष्ट्रीय खगोलीय संघ (IAU) ने इस स्थान को **'स्टेशियो शिव शक्ति' (Statio Shiv Shakti)** के रूप में आधिकारिक मान्यता दी।
- यह नाम **भारतीय पौराणिक कथाओं** से लिया गया है, जो "शिव" (पुरुष तत्व) और "शक्ति" (स्त्री तत्व) की अद्वितीय शक्ति और संतुलन को दर्शाता है।
- यह स्थल **तीन बड़े क्रेटरों** से घिरा हुआ है।

अध्ययन का महत्व:

- चंद्रमा पर वायुमंडल नहीं होने के कारण** वह निरंतर क्षुद्रग्रह (Asteroid) प्रभावों के प्रति संवेदनशील रहता है।
- सिर्फ चंद्रमा की सतह पर मौजूद प्रभाव क्रेटरों की गिनती करके** उस क्षेत्र की आयु का निर्धारण किया जा सकता है।
- चंद्रयान-3 एक अत्यधिक क्रेटरयुक्त (Heavily Cratered) क्षेत्र में उतरा**, जिससे यह अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।
- यह भूवैज्ञानिक मानचित्र वैज्ञानिकों को मिशन द्वारा एकत्र किए गए **डेटा को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।**
- यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के ऊँचाई वाले क्षेत्रों की **भूवैज्ञानिक इतिहास (Geological History)** की वैज्ञानिक समझ में सुधार करता है।

चंद्रयान-3:

- चंद्रयान-3 ने **23 अगस्त 2023 को** चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की, जिससे **भारत ऐसा करने वाला पहला देश बना।**
- इस मिशन का **उद्देश्य** सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन करना, एक रोवर को तैनात कर सतह का विश्लेषण करना और चंद्रमा की भूगर्भीय संरचना व खनिज संरचना का अध्ययन करना था।
- चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में **शिव शक्ति पॉइंट** पर उतरा।

न्यूट्रिनो / Neutrino

संदर्भ:

220 क्वाड्रिलियन इलेक्ट्रॉन वोल्ट की अत्यधिक ऊर्जा वाला एक **न्यूट्रिनो** भूमध्य सागर की गहराइयों में पहली बार देखा गया है। यह दुर्लभ उप-परमाणु कण Cubic Kilometre Neutrino Telescope (KM3Net) के भीतर एक डिटेक्टर द्वारा रिकॉर्ड किया गया, जो आस्ट्रोपार्टिकल भौतिकी में एक महत्वपूर्ण सफलता का प्रतीक है।

मुख्य बिंदु

- नया खोजा गया न्यूट्रिनो पहले खोजे गए किसी भी **न्यूट्रिनो से 30 गुना** अधिक ऊर्जा वाला है।
- इसे फरवरी **2023** में ARCA (Astroparticle Research with Cosmics in the Abyss) द्वारा खोजा गया था।
- इसकी ऊर्जा लगभग **120 क्वाड्रिलियन इलेक्ट्रॉनवोल्ट (eV)** मापी गई।
- यह फोटॉन (प्रकाश कणों) से एक क्वाड्रिलियन गुना और Large Hadron Collider द्वारा बनाए गए कणों से **10,000 गुना** अधिक ऊर्जावान है।
- KM3Net (Cubic Kilometre Neutrino Telescope) के वैज्ञानिकों के अनुसार, यह न्यूट्रिनो संभवतः मिल्की वे आकाशगंगा के बाहर से आया है।

न्यूट्रिनो क्या हैं?

- न्यूट्रिनो **सबएटॉमिक कण (subatomic particles)** हैं जो विद्युत रूप से तटस्थ होते हैं और इनका द्रव्यमान बहुत कम होता है।
- ये पदार्थ के साथ बहुत कमजोर रूप से अभिक्रिया (interact) करते हैं, जिससे ये बिना किसी रुकावट के बहुत लंबी दूरी तक यात्रा कर सकते हैं।
- इनकी यह विशेषता उन्हें **ब्रह्मांडीय घटनाओं (cosmic phenomena)** के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण बनाती है।

KM3Net परियोजना:

- **KM3Net परियोजना** में दो प्रमुख डिटेक्टर सुविधाएँ शामिल हैं:
 - **ARCA** (Sicily, 3.4 किमी गहराई) - उच्च-ऊर्जा न्यूट्रिनो का अध्ययन करता है।
 - **ORCA** (Provence, France, 2.4 किमी गहराई) - निम्न-ऊर्जा न्यूट्रिनो का अध्ययन करता है।
- ये डिटेक्टर न्यूट्रिनो के **रहस्यमय स्वभाव को समझने और उनके स्रोतों का पता लगाने** के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

नवीनतम खोज:

- फरवरी 2023 में, **ARCA डिटेक्टर** ने एक "**अल्ट्रा-हाई-एनर्जी**" न्यूट्रिनो का पता लगाया, जिसकी ऊर्जा **120 क्वाड्रिलियन इलेक्ट्रॉन वोल्ट** मापी गई।
- यह अब तक खोजे गए किसी भी न्यूट्रिनो की तुलना में **30 गुना अधिक ऊर्जा वाला** है।
- यह खोज **विशेष डिटेक्टरों की स्थिति** के कारण संभव हुई, जिससे दूर तक यात्रा करने वाले न्यूट्रिनो को देखा जा सका।

न्यूट्रिनो का ब्रह्मांडीय स्रोत:

- वैज्ञानिकों का मानना है कि यह न्यूट्रिनो **दूरस्थ आकाशगंगाओं के केंद्रों में स्थित सुपरमैसिव ब्लैक होल से उत्पन्न हुआ**।
- ये ब्लैक होल अपने चारों ओर के पदार्थ को निगलते हैं, जिससे अत्यधिक ऊर्जा वाले वातावरण बनते हैं, जो न्यूट्रिनो का निर्माण कर सकते हैं।
- हालांकि, **इस न्यूट्रिनो का सटीक स्रोत अभी भी अज्ञात** है।

न्यूट्रिनो का महत्व:

- न्यूट्रिनो ब्रह्मांड को समझने का एक **वैकल्पिक तरीका प्रदान करते हैं**, जो पारंपरिक विद्युत चुंबकीय अवलोकनों (electromagnetic observations) से भिन्न है।
- वे **ऐसी प्रक्रियाओं की जानकारी दे सकते हैं, जो अन्य तरीकों से देखी नहीं जा सकती**।
- न्यूट्रिनो का पता लगाकर वैज्ञानिक ब्लैक होल गतिविधि और तारकीय विस्फोटों (stellar explosions) जैसे ऊर्जावान ब्रह्मांडीय घटनाओं का अध्ययन कर सकते हैं।

चुनौतियाँ:

- **न्यूट्रिनो का पता लगाना अत्यंत जटिल कार्य है**, जिसके लिए गहरे पानी या बर्फ में स्थित विशाल वेधशालाओं की आवश्यकता होती है।
- जब न्यूट्रिनो पदार्थ के साथ क्रिया करता है, तो वह **Cherenkov Radiation (चेरेंकोव विकिरण)** उत्पन्न करता है, जो हल्की चमक के रूप में देखा जा सकता है।
- **KM3Net डिटेक्टर अभी निर्माणाधीन है**, और उनकी पूरी क्षमता का लाभ उठाना अभी बाकी है।

प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना / Prime Minister Dhan-Dhaanya Krishi Yojana

संदर्भ:

हाल ही में वित्त मंत्री ने अपनी रिपोर्ट 8वीं संघीय बजट प्रस्तुति में प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना की घोषणा की, जिसे विकसित कृषि-जिले कार्यक्रम भी कहा गया। यह योजना उन जिलों के लिए है जहां कम फसल उत्पादन, मध्यम फसल घनत्व और किसानों को पर्याप्त क्रेडिट तक पहुंच नहीं है।

प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना:

परिचय:

प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना एक नई पहल है, जिसका उद्देश्य 100 कृषि प्रभावित क्षेत्रों के किसानों को समर्थन देना है।

योजना की विशेषताएँ:

- यह उन क्षेत्रों पर केंद्रित है, जहाँ फसल उत्पादन कम है और किसानों को वित्तीय सहायता प्राप्त करने में कठिनाई होती है।
- राज्य सरकारों के सहयोग से इस योजना को 100 जिलों में लागू किया जाएगा।
- इस योजना से लगभग 1.7 करोड़ किसान लाभान्वित होंगे।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने पर ध्यान दिया गया है ताकि प्रवास (Migration) मजबूरी न होकर एक विकल्प बने।

योजना के 5 मुख्य लक्ष्य:

1. कृषि उत्पादकता में वृद्धि
2. सिंचाई सुविधाओं में सुधार
3. कृषि ऋण की उपलब्धता में सुधार
4. फसल विविधीकरण और सतत कृषि पद्धतियों को अपनाना
5. पंचायत और ब्लॉक स्तर पर कटाई के बाद भंडारण सुविधाओं को बढ़ाना

प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना के प्रमुख घटक:

1. **प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान:** उत्पादकता बढ़ाने के लिए तकनीकी उपाय।
2. **क्रेडिट तक बेहतर पहुंच:** वित्तीय समर्थन के माध्यम से किसानों को ऋण उपलब्ध कराना।
3. **इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास:** भंडारण और सिंचाई जैसी सुविधाओं का विकास।
4. **सतत कृषि पद्धतियाँ:** दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण-अनुकूल कृषि विधियाँ।
5. **रोजगार सृजन:** ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने से प्रवास में कमी।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना की मुख्य विशेषताएँ:

1. योजना का कार्यान्वयन:

- यह योजना 100 आकांक्षी जिलों में लागू की जाएगी, जहाँ कृषि उत्पादकता कम और फसल तीव्रता औसत है।
- पहले से मौजूद सरकारी योजनाओं को समेकित कर कृषि क्षेत्र में समग्र सुधार लाने पर जोर दिया जाएगा।
- स्थानीय और ब्लॉक स्तर पर भंडारण सुविधाएँ विकसित की जाएंगी, जिससे कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।
- सिंचाई संरचना का विस्तार और सिंचाई प्रणाली में सुधार किया जाएगा ताकि खेती के दौरान जल वितरण अधिक प्रभावी हो।

2. वित्तीय आवंटन:

- दलहन मिशन: ₹1,000 करोड़
- सब्जी और फल मिशन: ₹500 करोड़
- बिहार में मखाना बोर्ड: ₹100 करोड़
- उच्च उपज देने वाले हाइब्रिड बीज: ₹100 करोड़
- कपास पर तकनीकी मिशन: ₹500 करोड़

कृषि और किसानों के लिए अन्य प्रमुख योजनाएँ:

1. **PM-KISAN योजना:** किसानों को सीधे वित्तीय समर्थन प्रदान करती है, जिससे वे फसलों के स्वास्थ्य और उत्पादन के लिए आवश्यक इनपुट प्राप्त कर सकें।
2. **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY):**
 - यह फसल बीमा योजना किसानों को प्राकृतिक आपदाओं, कीटों और बीमारियों से बचाव प्रदान करती है।
 - फसल हानि की स्थिति में आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करती है।
3. **किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना:**
 - 1998 में शुरू की गई, यह योजना किसानों को आसान ऋण पहुंच प्रदान करती है।
 - कृषि इनपुट समय पर खरीदने के लिए मदद करती है और साथ ही घरेलू खर्चों को पूरा करने में भी सहायक है।

म्यूचुअल फंड निवेश ट्रेसिंग और पुनर्प्राप्ति सहायक / Mutual Fund Investment Tracing and Retrieval Assistant

संदर्भ:

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI) ने **MITRA** (Mutual Fund Investment Tracing and Retrieval Assistant) लॉन्च किया है।

- जिसका उद्देश्य निवेशकों को उनके **निष्क्रिय या अपंजीकृत म्यूचुअल फंड फोलियो** को ट्रैक और पुनः प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है

Mutual Fund Investment Tracing and Retrieval Assistant (MITRA):

MITRA एक नया **डिजिटल प्लेटफॉर्म** है, जिसे निवेशकों को उनके **निष्क्रिय या बिना दावा किए गए म्यूचुअल फंड फोलियो** का पता लगाने और पुनः प्राप्त करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

उद्देश्य:

MITRA का मुख्य उद्देश्य निवेशकों को एक उद्योग-स्तरीय सर्वेचल डेटाबेस प्रदान करना है, जो उन्हें निम्नलिखित कार्यों में सक्षम बनाए:

- निष्क्रिय और बिना दावा किए गए फोलियो की पहचान करना।
- भूल गई या उपेक्षित म्यूचुअल फंड निवेशों का पता लगाना।
- उनके नाम पर किए गए निवेशों को सत्यापित करना, जिनके लिए वे कानूनी रूप से हकदार हो सकते हैं।
- निवेशकों को अपने KYC (Know Your Customer) जानकारी को अद्यतन करने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि वे वर्तमान मानदंडों के अनुसार सही जानकारी रख सकें।

MITRA की मुख्य विशेषताएँ:

- उद्योग-व्यापी डेटाबेस:** विभिन्न फंड हाउसों में पड़े निष्क्रिय और बिना दावा किए गए म्यूचुअल फंड फोलियो को एक स्थान पर एकत्र करता है।
- उपयोगकर्ता-अनुकूल खोज उपकरण:** निवेशक PAN या अन्य पहचान विवरण दर्ज करके आसानी से अपनी निवेश जानकारी खोज सकते हैं।
- KYC अद्यतन सहायता:** निवेशकों को KYC विवरण अपडेट करने में मदद करता है, जिससे उनके फोलियो सक्रिय और सुरक्षित बने रहें।
- कानूनी दावों में सहायता:** निवेशकों और उनके कानूनी उत्तराधिकारियों को उनके सही निवेश दावों की पहचान करने में मदद करता है।
- निष्क्रिय फोलियो कम करना:**
 - निवेशकों को अपने फोलियो **पुनः सक्रिय करने के लिए प्रोत्साहित करता है**, जिससे म्यूचुअल फंड उद्योग में **बिना दावे वाले और निष्क्रिय खातों की संख्या घटती है**।

निष्क्रिय फोलियो वर्गीकरण मानदंड:

एक **फोलियो** को **निष्क्रिय** के रूप में वर्गीकृत किया जाता है यदि निम्नलिखित मानदंड होते हैं:

- किसी भी प्रकार की निवेशक-प्रेरित लेन-देन (आर्थिक या गैर-आर्थिक) की दस वर्षों तक कोई गतिविधि नहीं।
- इसके बावजूद, फोलियो में **यूनिट बैलेंस** मौजूद रहता है।

भारत में सुरक्षा और विनियम बोर्ड (SEBI):**SEBI (Securities and Exchange Board of India)**

भारत में **सुरक्षा बाजार** का प्रमुख नियामक है। **SEBI** को **वित्त मंत्रालय, भारत सरकार** के तहत एक सांविधिक निकाय के रूप में स्थापित किया गया था और यह उसी के तहत कार्य करता है।

SEBI का गठन:

- अप्रैल 1988 में, भारत सरकार के एक कार्यकारी प्रस्ताव के माध्यम से **SEBI** का गठन हुआ।
- शुरुआत में, यह एक **गैर-कानूनी निकाय** था, जिसमें कोई कानूनी अधिकार नहीं था।

कानूनी अधिनियम:

- 1992 में **SEBI अधिनियम** के तहत यह एक **स्वतंत्र और कानूनी निकाय** बन गया।

SEBI के उद्देश्य:

SEBI के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- भारतीय पूंजी बाजार के प्रहरी के रूप में कार्य करना।
- सुरक्षा में निवेशकों के हितों की रक्षा करना।
- सुरक्षा बाजार का संवर्धन और विनियमन करना।

SEBI का मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालय:

- SEBI का मुख्यालय **मुंबई** में स्थित है।
- इसके 4 क्षेत्रीय कार्यालय **अहमदाबाद, कोलकाता, चेन्नई और दिल्ली** में स्थित हैं।

ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल / BrahMos Cruise Missile

संदर्भ:

अगली पीढ़ी की ब्रह्मोस मिसाइल, जिसे ब्रह्मोस एनजी के नाम से जाना जाता है, अपनी पहली उड़ान परीक्षण के करीब पहुंच रही है। इसका **परीक्षण 2026** में होने की संभावना है, जबकि **उत्पादन 2027-28 में शुरू** होने की योजना है।

BrahMos Missile:

परिचय:

- **BrahMos** भारत और रूस के संयुक्त उपक्रम से विकसित **दुनिया की सबसे तेज़ सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल** है।
- इसका नाम **"Brahmaputra" (भारत) और "Moskva" (रूस)** नदियों के नाम पर रखा गया है।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **गति और रेंज:**
 - इसकी **मारक दूरी 290 किमी** तक है।
 - यह **Mach 2.8 (ध्वनि की गति से लगभग तीन गुना तेज़)** की रफ्तार से उड़ान भरती है।
2. **इंजन संरचना:**
 - यह **दो-चरणीय मिसाइल** है:
 - **पहला चरण:** ठोस प्रणोदक (Solid Propellant) इंजन
 - **दूसरा चरण:** तरल रैमजेट (Liquid Ramjet) इंजन
3. **मल्टी-प्लेटफॉर्म और ऑल-वेदर क्षमता:**
 - यह **जल, थल और वायु** से दागी जा सकती है।
 - यह **दिन और रात, किसी भी मौसम** में सटीक हमले में सक्षम है।
4. **"Fire and Forget" तकनीक:**
 - यह मिसाइल **दागने के बाद लक्ष्य को स्वतः खोजकर नष्ट** कर सकती है।
 - इसमें **अत्याधुनिक गाइडेंस सिस्टम और सटीक निशानेबाजी** की क्षमता है।

BrahMos NG (Next Generation):

परिचय: BrahMos NG भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित एक उन्नत सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **डिजाइन और संरचना:** यह अपने पिछले संस्करण की तुलना में **पतली, हल्की और अधिक कॉम्पैक्ट** है।
 - इसकी **लंबाई 6 मीटर** और **वजन 1.6 टन** है, जबकि पुरानी ब्रह्मोस मिसाइल **9 मीटर लंबी और 3 टन वजनी** थी।
2. **प्लेटफॉर्म अनुकूलता:** इसका **छोटा आकार और हल्का वजन** इसे कई विमानों पर तैनात करने योग्य बनाता है।
 - इसे **Sukhoi-30MKI** और **स्वदेशी LCA तेजस** से दागा जा सकता है।
3. **रेंज और गति:** इसकी **मारक दूरी 290 किमी** तक है।
 - यह **3.5 Mach (ध्वनि की गति से 3.5 गुना तेज़)** की गति से लक्ष्य भेदने में सक्षम है।
4. **प्रभावशीलता और स्टेल्थ क्षमता:** इसका **रडार क्रॉस-सेक्शन कम** होगा, जिससे यह दुश्मन की रडार पकड़ में कम आएगी।
 - इसमें **स्वदेशी विकसित AESA रडार** वाला **होममेड सीकर** होगा, जो सटीकता और स्टेल्थ क्षमता को बढ़ाएगा।

अनुकूलता और तैनाती:

- **BrahMos NG** को विभिन्न सैन्य प्लेटफॉर्म पर तैनात किया जा सकता है।
- यह **Sukhoi-30MKI** और **स्वदेशी हल्के लड़ाकू विमान (LCA) तेजस** में आसानी से फिट किया जा सकता है।
- इसका **हल्का और कॉम्पैक्ट डिजाइन** इसे और अधिक सैन्य संपत्तियों पर तैनात करने योग्य बनाता है।

अंतर्राष्ट्रीय रुचि और निर्यात समझौते:

- BrahMos मिसाइल सिस्टम की **वैश्विक मांग** बढ़ रही है।
- **फिलीपींस** को पहले ही BrahMos की तीन बैटरियों की आपूर्ति की जा चुकी है।
- **इंडोनेशिया** के साथ **450 मिलियन अमेरिकी डॉलर** के नए निर्यात समझौते पर बातचीत अंतिम चरण में है।
- यह सौदा पूरा होने पर इंडोनेशिया, फिलीपींस के बाद BrahMos सिस्टम का दूसरा विदेशी खरीदार बन जाएगा।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !



ANKIT AVASTHI

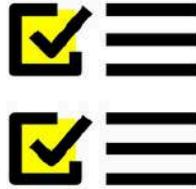


RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now



GA FOUNDATION

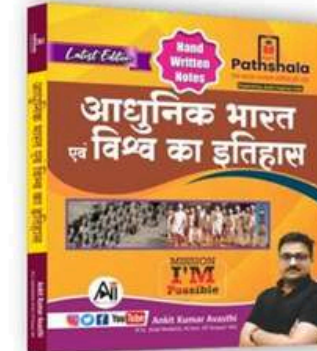
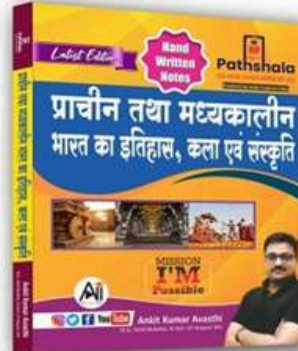
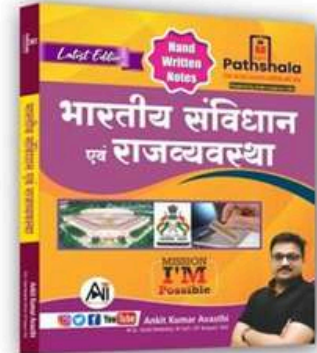
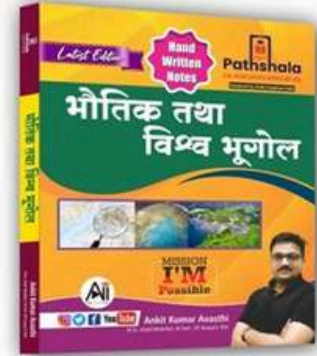
Hand Written
Notes


Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ **Only**
1999

**4 पुस्तकों का
सम्पूर्ण सेट**



अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**



APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP

TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

▶ POLITY ▶ ECONOMICS
▶ HISTORY ▶ GEOGRAPHY

FOR ALL

 DAILY LIVE CLASSES

 WEEKLY TEST

 CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)

 LIVE DOUBT SESSIONS

 DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs

4999/-



Apni Pathshala  7878158882

 Apni.Pathshala  kaankit  AnkitAvasthiSir  Avasthiankit

ONLY POLITY



1499
RS

DAILY LIVE CLASSES

-  WEEKLY TEST
-  CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
-  LIVE DOUBT SESSIONS
-  DAILY PRACTISE PROBLEM

Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!

